5

आदमी जिसने जीवन दे दिया

(2 राजाओं 4:8-17)

एलीशा के जीवन की प्रसिद्ध घटनाओं में से एक उस स्त्री की है जिसने उसके लिए ''नबी की कोठरी'' बनाई और उसे एक बेटे का दान दिया गया। यह प्रसिद्ध कहानी बच्चों की बाइबल क्लास में पसन्दीदा कहानी है। मैं इस पाठ को उस घटना पर ''आदमी जिसने जीवन दिया'' नाम दे रहा हूं।

अतिथ्य सत्कार किया गया (4:8-11)

एलीशा ने पूरा इस्राएल घूमा था। एक प्रसिद्ध रास्ता जिसमें वह जाता था (आयतें 8, 9) यिज्रेल से होकर जाता था। जहां राजा का ग्रीष्मकालीन महल था (1 राजाओं 18:46; 21:1), करमेल पहाड़ की ओर (2 राजाओं 4:25) जहां एलिय्याह ने बाल के नबियों का सामना किया था (1 राजाओं 18)। शायद एलीशा अपनी सार्वजनिक सेवकाई के दबाव से राहत पाने यानी विश्राम करने और ध्यान लगाने के लिए करमेल पहाड़ पर गया होगा।

करमेल पहाड़ के मार्ग पर यिज्रेल के उत्तर में तीन मील, शूनेम नाम का एक गांव था (देखें यहोशू 19:18; ''एलीशा के समय में इस्राएल, यहूदा और आस-पास के देश'' मानचित्र देखें)। शूनेम पहाड़ियों में उंचाई पर था, ''सदा बहार जैतून के भागों और लहलहाते खेतों के बीच।'' यह एक छोटा सा शांत नगर था ''जिसमें रहने वाले मुख्तया किसान थे और यह आराम और सादगी वाली जगह थी।''[1] यिज्रेल और शूनेम ने कुछ ही मील की दूरी थी, पर प्रभु में भक्ति के सम्बन्ध में उनमें बड़ा फर्क था। यिज्रेल बड़ी देर से राजसी दुष्टता का केन्द्र था (देखें 1 राजाओं 21; 2 राजाओं 9:30)। परन्तु शूनेम गांवों में विश्वास की लाट अभी भी कुछ लोगों के हृदय में चमक रही थी।

आतिथ्य सत्कार

शूनेम में विश्वासयोग्य लोगों में से एक का नाम हमारी कहानी की आरम्भिक आयत में मिलता है: ''एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहां एक कुलीन स्त्री थी'' (2 राजाओं 4:8क)। हम इस स्त्री का नाम नहीं जानते, पर इतना जानते हैं कि वह जवान थी, जिसका विवाह बूढ़े पति से हो गया था[2] (आयत 14)। जो एक किसान था (आयत 18)। हमें यह नहीं बताया गया है कि वह ''कुलीन थी।'' इस शब्द का अर्थ उसकी सम्पत्ति से बढ़कर उसके सामाजिक रुतबे से था।[3] NIV में ''खाती पीती'' है। सबसे बढ़कर बात यह है कि उसने एक मूर्तिपूजक और ईश्वररहित देश में प्रभु में अपने विश्वास को बनाए रखा (देखें आयतें 9, 16; 1 राजाओं 19:18)।

किसी प्रकार इस स्त्री का सम्पर्क एलीशा से हो गया। शायद एलीशा की आदत थी कि वह जिधर से गुज़रता वहां नगर-नगर प्रचार करता था और उस स्त्री ने उसे सुना था। हो सकता है कि उसने उसे गांवों में से जाते हुए किसी दिन यूं ही पहचान लिया; सम्भवतया वह अपने समय का प्रसिद्ध व्यक्ति होगा। जो भी हो उस स्त्री ने उसे देखा और अपने घर खाने पर बुलाया। वचन बताता है कि ''उस ने उसे रोटी खाने के लिये बिनती करके विवश किया'' (2 राजाओं 4:8ख)। उसने उसे आने के लिए ''दबाव डाला'' (CJB); उसने उस से ''आग्रह किया'' (NCV); उसने उस से ''भीख मांगी'' (NIV)। जहां मैं रहता हूं वहां हम कहेंगे, ''उसने उत्तर में 'न' नहीं सुननी थी।''

एलीशा उसकी पेशकश को मानकर प्रसन्न हुआ होगा। अधिकतर प्रचारकों को खाने के लिए घर में बुलाए जाने पर अच्छा लगता है। उस समय एलीशा का गेहजी नाम का एक सेवक था (आयत 12), सो निमन्त्रण वास्तव में *दो* जनों को दिया गया।

हमारे पिछले पाठ में एलीशा ने एक स्त्री की सहायता की थी जिसके पास कुछ नहीं था; इस पाठ में वह एक ऐसी स्त्री से मिला जो धनवान थी। परमेश्वर की तरह वह ''किसी का पक्ष नहीं करता,'' था (प्रेरितों 10:34)। उसे धनवानों से और निर्धनों से, शक्तिशाली लोगों और शक्तिहीन लोगों से कोई दिक्कत नहीं थी।

खाने के बाद, जब एलीशा बाहर निकलने लगा तो स्त्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह जब भी उस इलाके में आए उसी के घर खाना खाए। आयत 8 के अन्त में हम पढ़ते हैं, ''जब जब वह उधर से जाता, तब-तब वह वहां रोटी खाने को उतरता था।'' उस घर में खाना जो भी तैयार करता हो वह अवश्य स्वादिष्ट खाना बनाने वाला होगा। प्रचारकों को घर का खाना खाने के लिए बुलाए जाने पर अच्छा लगता है; परन्तु यदि खाना खाने के योग्य न हो तो वे दोबारा न आने के कई बहाने ढूंढ़ सकते हैं।

बाइबल उस शूनेमी स्त्री के घर के खानों का विवरण तो नहीं देती, पर खाने की मेज़ पर होने वाली बातचीत की कल्पना करना कठिन नहीं है। मैं एलीशा को एलिय्याह के साथ अपने रोमांचकारी वर्षों और यह कि यहोवा किस प्रकार उनके साथ था बड़े रोमांच से बताते सुन सकता हूं। मैं उस स्त्री को मुस्कुराते और सिर हिलाते हुए देखने की कल्पना करता हूं। निश्चय ही वह नबी के दृढ़ विश्वास से मज़बूत हुई होगी और एक ईश्वर रहित देश में विश्वास का स्थान पाकर प्रोत्साहित हुई होगी। वह समय कितना कीमती है जो हम समान विश्वास वाले लोगों के साथ बिताते हैं!

कहानी को पढ़ते हुए आगे आप देखेंगे कि स्त्री ने स्पष्टतया अपने घराने में आत्मिक मामलों में बढ़त पा ली थी (आयतें 8, 9, 25)। बाइबल बताती है कि पति/पिता को अपने घर का आत्मिक अगुआ हो (इफिसियों 6:4) परन्तु कई परिवारों में ऐसा नहीं है। स्त्री को अपने आपको इस स्थिति में पाने पर क्या करना चाहिए? वैसे ही करें जैसे शूनेमी स्त्री ने किया। यानी अपने विश्वास को बनाए रखें और अपने पति को जो सही है वह करने के लिए प्रोत्साहित करे (देखें 1 पतरस 3:1, 2)।

एक दिन, स्त्री ने अपने पति से कहा, ''सुन यह जो बार बार हमारे यहां से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है'' (आयत 9)। ''भक्त'' शब्द का

अर्थ है ''अलग किया हुआ'' पुराने नियम में किसी नबी के लिए ''भक्त'' शब्द यहीं पर लागू हुआ।[4] दुख की बात है कि कुछ लोग जो ''परमेश्वर के जन'' होने का *दावा* करते हैं वे भक्त *नहीं* हैं। एलीशा से बार-बार मिलने पर उस स्त्री को यकीन हो गया था कि वह सचमुच में परमेश्वर के विशेष प्रतिनिधि के रूप में था ''अलग किया हुआ'' आदमी था।

उसने अपने पति के सामने एक प्रस्ताव रखा ''हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं, और उस में उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहां आए, तब-तब उसी में टिका करे'' (आयत 10)। उसने अपने घर की छत के ऊपर नबी के लिए एक छोटा कमरा बनाने की इच्छा की (देखें CJB) यह परमेश्वर के नबियों की गम्भीर जीवनशैली के अनुकूल तैयार किया हुआ कमरा होगा पर यह विशेष रूप से उसी का हो। यह संसार की भागदौड़ से दूर एक आश्चर्य होगा। (केवल एक व्यक्ति के लिए सामान का उल्लेख है, परन्तु एलीशा के सेवक गेहज़ी के लिए भी प्रबन्ध किया गया होगा [आयतें 11, 12]।)

हम नहीं जानते कि उसके पति ने क्या जवाब दिया। क्या उसने बड़े जोश से जवाब दिया या केवल अपनी जवान पत्नी को ''खुश रखने'' के लिए उसके प्रस्ताव को मान लिया। कम से कम उसने सुझाव को मान लिया और कमरा बन गया। चाहे यह सादा था, पर क्या आप नहीं जानते कि उस स्त्री ने यह सुनिश्चित किया कि हर चीज़ बिल्कुल सही हो? मैं पहली बार एलीशा का कमरा उसे दिखाते हुए और उसे यह बताते हुए कि यह उसका कमरा है उसके चेहरे पर मुस्कुराहट देख सकता हूं। बेशक एलीशा भी खुश हुआ होगा। जब वह उस इलाके में जाता, अब उसके पास ठहरने और आराम करने की जगह थी (आयत 11)। उदारता के शूनेमी स्त्री के इस काम ने हज़ारों नहीं तो सैकड़ों लोगों को अपने घरों में ''नबियों के कमरे'' बनाने यानी बाहर से आने वाले प्रचारकों तथा मिशनरियों के लिए अलग कमरे बनाने के लिए प्रेरित किया है।

पहुनाई में प्रोत्साहन

पहुनाई करने वाला शब्द उस स्त्री का वर्णन करता है। पहुनाई करने वाला और ''पहुनाई'' शब्द लातीनी भाषा के *hospes* शब्द से लिए गए हैं जिसका अर्थ है ''अतिथि।'' ''पहुनाई करना'' दूसरों के साथ गरम जोशी से और उदारतापूर्ण व्यवहार करने के अर्थ में है। अन्य शब्दों में उन्हें विशेष अतिथि मानना। पहुनाई पुराने और नये दोनों नियमों में एक महत्वपूर्ण विषय है। ऐल्डरों की एक योग्यता पहुनाई करने वाले होना है (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8)। पतरस ने कहा, ''बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई करो'' (1 पतरस 4:9)।

इब्रनियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''अतिथि सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर सत्कार किया है'' (इब्रानियों 13:2)। यह सम्भवतया उत्पत्ति 18 में अब्राहम द्वारा स्वर्गदूतों का अतिथि सत्कार करने की बात थी (आयतें 1-8, 16, 22; देखें 19:1)। क्या हम आज भी ''बिना जानें'' स्वर्गदूतों की सेवा कर सकते हैं? इब्रानियों 13:2 यह नहीं कहता; परन्तु यह बहुत पहले हुई घटना की बात बताता है। आज ऐसा होने या न होने की बात का अनुमान लगाने का तुक नहीं है, क्योंकि यदि हो भी जाए तो हमें कभी पता नहीं चलेगा कि हम ने ऐसा किया! इस वचन का उद्देश्य यह है कि हम हर अजनबी के साथ

ऐसे व्यवहार करें *जैसे* वह हमारे पास प्रभु की ओर से आया हो (देखें मत्ती 25:35, 38, 40)!

यदि आपका पालन पोषण अतिथि सत्कार करने वाले परिवार में हुआ है तो आपके पास कितनी कीमती यादें होंगी! आपको अपने पिता की यह बात याद होगी, ''एक और आदमी के लिए भी जगह है!'' आपको हो सकता है कि अपनी मां याद आए जिससे यह पता चलने पर कि कोई मेहमान आ रहा है, उसका चेहरा खिल जाता था। कइयों के लिए रविवार के दिन खाने पर प्रचारक के आने या शृंखलाबद्ध सुसमाचार सभाओं के दौरान सुसमाचार प्रचारक के उनके घर में रहने की बात याद होगी। कई सालों में मुझे मसीह में कई भाइयों और बहनों ने बताया है कि अपने व्यक्तिगत विश्वास के आरम्भ का समय वे तब से मानते हैं जब उन्होंने अपने पिताओं से खाने की मेज़ पर परमेश्वर और उसके वचन की बातें प्रचारकों से करते सुना।

शायद कई लोग यह सोचकर हिचकिचाते हैं कि ''पर मेरा घर तो इतना अच्छा नहीं है कि इसमें लोगों को बुलाया जाए,'' या ''जो हम अपने घर में खाते हैं उसे दूसरों को खाने के लिए कहना मुझे बेकार लगेगा।'' बेशक इब्रानियों 13:2 में ''आदर सत्कार'' शब्द इस्तेमाल किया गया है पर एक लेखक ने ध्यान दिलाया कि जिस प्रकार आज कई बार इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है उससे अतिथि सत्कार करने वाला होने और ''आदर सत्कार करने'' में अन्तर है:[5]

- अतिथि सत्कार कहता है, ''जो कुछ मेरे पास है, चाहे अधिक चाहे कम, वह परमेश्वर की ओर से दान है।'' मैं इसका इस्तेमाल उसके लिए करना चाहता हूं, ''न कि मैं जो कुछ मेरे पास है उससे आपको प्रभावित करना चाहता हूं।''
- अतिथि सत्कार कान में कहता है, ''जो मेरा है वह आपका है। इसे इस्तेमाल करें,'' यह चिल्लाने के बजाय कि ''यह मेरा है! इसकी तारीफ़ करो!''
- अतिथि सत्कार शाबाशी लेने के बजाय सेवा करने की तलाश में रहता है।
- अतिथि सत्कार अगंतुक को घर जैसा माहौल देता है, जबकि सांसारिक ''मनोरंजन'' अतिथि को बेबस करता है।

हाथ में रखे दान का उतना महत्व नहीं है जितना दिल की उदारता का है। यीशु ने कहा यदि कोई ''जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठण्डा पानी पिलाए, मैं तुमसे सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा'' (मत्ती 10:42)। परमेश्वर हम सब की अतिथि सत्कार करने की कला को बढ़ाने में सहायता करे।

अतिथि सत्कार का प्रतिफल (4:11-17)

आभार: आवश्यकता

एक दिन एलीशा अपनी ''उपरोठी कोठरी'' (आयत 11) में अतिथि सत्कार का जो उससे किया गया था आनन्द लेते हुए आराम कर रहा था, कि उसने निर्णय लिया कि उसे आभार व्यक्त करने का कोई ढंग ढूंढ़ना चाहिए। बाद में यीशु ने कहा, ''जो भविष्यवक्ता को भविष्यवक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यवक्ता का बदला पाएगा'' (मत्ती 10:41क)। एलीशा ने फैसला लिया कि इस बार वह इस स्त्री को ''भविष्यवक्ता का बदला'' देगा।

''और उस ने अपने सेवक गेहजी से कहा, उस शुनेमिन को बुला ले'' (2 राजाओं 4:12क)। यहां पहली बार हम गेहजी के बारे में पढ़ते हैं। वह वैसे ही एलीशा का सेवक था जैसे किसी समय एलीशा एलिय्याह की सेवा करता था। ''परन्तु दोनों सेवकों के व्यवहार में इतना अन्तर था!'' इस पर हम आगे और बात करेंगे।

गेहजी उस स्त्री को एलीशा के पास बुला लाया और ''वह उसके साम्हने खड़ी हुई'' (आयत 12ख)। परन्तु एलीशा ने उससे बात नहीं की। इसके बजाय उसने गेहजी से कहा, ''इस से कह, कि तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिए क्या किया जाए?'' (आयत 13क)। हमें नहीं मालूम कि एलीशा ने उससे सीधे बात क्यों नहीं की। (बाद में उसने उससे सीधे बात की; देखें आयतें 15 और 16।) कई लेखकों का मत है कि उसने इसलिए बात नहीं की क्योंकि स्थान एलीशा का शयनकक्ष था और कुछ बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक था।[6]

मुझे नहीं मालूम की उस समय की रवायत क्या थी पर मुझे इतना पता है कि परमेश्वर का सेवक स्त्री से व्यवहार करते समय लापरवाही नहीं बरत सकता। जब मैं पूर्णकालिक प्रचारक था और कोई स्त्री मेरे अध्ययन कक्ष में आ जाती तो मैं दरवाजा कभी बन्द नहीं करता था। (कलीसिया के सचिव का दफ़्तर पास ही होता था।) मैं अकेले किसी स्त्री से मिलने या अध्ययन के लिए कभी नहीं गया। मेरी पत्नी हमेशा मेरे साथ होती थी। अन्य किसी भी नैतिक त्रुटि से बढ़कर प्रचारकों ने शारीरिक अशुद्धताओं में जीवन बर्बाद किया है।

फिर से उस स्त्री को कहे एलीशा के शब्दों पर ध्यान दें: ''तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिये क्या किया जाए?'' (आयत 13क)। अनुवादित शब्द ''चिन्ता'' का अर्थ ''फिक्र''[7] हो सकता है। आज हम कहेंगे, ''तुम ने हमारा बड़ा ध्यान रखा'' है। NIV में है, ''तुम ने हमारे लिए इतना कष्ट सहा'' मुझे आयत 13 के पहले भाग का CJB का अनुवाद अच्छा लगता है: ''तू ने हमारे साथ इतना अतिथ्य सत्कार दिखाया है! धन्यवाद जताने के लिए मैं क्या कर सकता हूं?''

हम में से कइयों को अतिथि सत्कार करने वाले होने से अधिक करने की आवश्यकता है। यानी हम *सब* को आभार जताने वाले होना आवश्यक है। पौलुस ने कहा, ''और मसीह की शान्ति ... तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो'' (कुलुस्सियों 3:15)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, ... उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें'' (इब्रानियों 12:28क)। दुष्ट लोगों का वर्णन करते हुए पौलुस ने उनका गुण ''अपस्वार्थी'' होना जोड़ दिया (2 तीमुथियुस 3:2)।

सी. पी. मैकार्थी ने लिखा कि ''सबसे आम पाप अकृतज्ञ होने का है।''[8] साइनिक ने कहा, ''यदि आप कृतज्ञ शब्द ढूंढ़ना चाहते हैं तो आपको यह शब्दकोष में मिल जाएगा।''[9] बच्चा सौ तक गिनना सीखता है जब कि हमें अपनी आशिषें गिनना सीखने की आवश्यकता है।

किसी ने कहा है, ''विचार करने से धन्यवाद आता है।''[10] यदि हम इस मामले को थोड़ा गम्भीरता से लें तो हम पाएंगे कि हर बात में धन्यवाद दिया जा सकता है। मुझे यह दर्शाने वाली कहानियां पसन्द हैं। ऐसी एक कहानी एक आदमी की है जो तूफ़ान भरे रविवार के दिन प्रार्थना कर रहा था, ''प्रभु तेरा धन्यवाद हो कि रोज़ ऐसा नहीं होता।''[11] एक पसंदीदा कहानी मैथ्यू हैनरी की है जो चोरों और डाकुओं के बीच में गिर गया और उसे लूट लिया गया। उसने अपनी

डायरी में लिखा:

> पहले तो धन्यवाद देता हूं कि मुझे पहले कभी किसी ने नहीं लूटा। फिर [क्योंकि] चाहे उन्होंने मेरा पर्स ले लिया, पर मेरा प्राण नहीं लिया; तीसरा, क्योंकि चाहे उन्होंने मेरा सब कुछ ले लिया, पर बहुत नहीं था; और चौथा लूटा मुझे गया, न कि [मैंने लूटा] कोई और।[12]

एक और कहानी एक बुज़ुर्ग महिला की है जो प्रार्थना करती थी, ''प्रभु तेरा धन्यवाद, मेरे ये दोनों दांत सही सलामत हैं, एक मेरे ऊपर के जबड़े का ओर एक नीचे वाले जबाड़े का, इतना काफ़ी है कि मैं खाना चबा सकती हूं।''[13]

एलीशा शूनेमी स्त्री के लिए जो कुछ उसने उसके लिए किया था अभारी था। हमें उस सब के लिए जो दूसरे हमारे लिए करते हैं आभारी होना चाहिए। पियरे कारोन ने लिखा है, ''जिसको अच्छा बदला मिलता है उसे इसको कभी नहीं भूलना चाहिए; जो ऐसा करता है उसे कभी याद नहीं रखना चाहिए।''[14] हमें उन सभी आशिषों के लिए भी अपने परमेश्वर का आभारी होना चाहिए। जो हमें मिलती हैं (याकूब 1:17)। अपने पति की कब्र पर पत्थर लगाते हुए एक पहाड़ी स्त्री के पास खदेरे से टेडे मेडे अक्षरों वाला यह शिलालेख था: ''वह हर बात में धन्यवाद देता था।''[15] क्या यह अद्‌भुत नहीं होगा कि हम में से हर किसी के लिए ऐसा कहा जाए।

आभार: काम

आभार व्यक्त करने के बाद एलीशा ने स्त्री से पूछा कि वह उसके लिए क्या कर सकता है। वह केवल धन्यवाद कहकर ही नहीं रुकना चाहता था; वह *दिखाना* चाहता था कि वह कितना आभारी है। उसने कहा, ''क्या तेरी चर्चा राजा, या प्रधान सेनापति से की जाए?'' (2 राजाओं 4:13ख)। जहां हम रहते हैं वहां हम इसे इस प्रकार कहेंगे, ''क्या मैं तुम्हारी सिफ़ारिश कर दूं?'' राजा और प्रधान सेनापति (जरनैल) इस्राएल देश में वह सबसे शक्तिशाली आदमी थे। नबी ने उनके प्राण बचाए थे (2 राजाओं 3); इस कारण वे उसके कर्ज़दार थे और उसकी किसी भी वाजिब विनती को इनकार नहीं कर सकते थे। राजा से बात करके एलीशा उस स्त्री और उसके पति के लिए दरबार में जगह दिला सकता होगा या (कर से राहत सहित[16]) कई शाही रियायत दिलवा सकता था। वह सेनापति को स्त्री और उसके पति के कानूनी अधिकार दिलाने के लिए कह सकता था।

यदि आपसे कोई, जो देश के सबसे शक्तिशाली लोगों को प्रभावित कर सकता हो, इस प्रकार की पेशकश करे तो क्या हो? आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? आप क्या विनती करेंगे? उन प्रश्नों के लिए आपका उत्तर क्या होगा, स्त्री के उत्तर से इसकी तुलना करें। उसने कहा, ''मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूं'' (2 राजाओं 4:13ग)। अपने उत्तर में उसने अपनी मौखिक ''शॉट हैंड'' का इस्तेमाल किया। CJB में उसके उत्तर को इस प्रकार विस्तार दिया गया है: ''मैं जैसी हूं खुश हूं, अपने लोगों के बीच में रही हूं।'' अन्य शब्दों में ''मुझे किसी शाही या सैनिक समर्थन की आवश्यकता नहीं है। राजा के महल से मुझे शूनेम में अपना घर पसन्द है। मेरा अपने परिवार, अपने मित्रों या अपने पड़ोसियों से कोई झगड़ा नहीं है। मैं यहीं खुश हूं!'' सम्भवतया

वह यह भी संकेत दे रही थी, ''मैंने यह काम इनाम पाने के लिए नहीं किया। आपकी सेवकाई में सहायता करने के योग्य होना ही अपने आप में बड़ा इनाम है।'' LB में उसके उत्तर को इस प्रकार अनुवाद किया गया है: ''मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूं।''

मुझे चकित होने के लिए रुकना चाहिए। न केवल यह स्त्री आतिथ्य सत्कार करने वाली थी बल्कि उसका मन भी संतुष्ट था! मैं उसके लिए एक सतंभ बनवाने और उसके नीचे यह शब्द लिखवाने की सोचता हूं: ''एक संतुष्ट स्त्री!'' बाइबल आज्ञा देती है, ''जो तुम्हारे पास है उसी पर संतोष करो'' (इब्रानियों 13:5; KJV; देखें फिलिप्पियों 4:11; 1 तीमुथियुस 6:8); परन्तु हम में से कुछ लोग ही उस लक्ष्य को पाते हैं। हर संतुष्ट मन के लिए असंख्य बेचैन दिल हैं जिन्हें पता ही नहीं कि संतुष्ट क्या होती है। शायद शूनेभी स्त्री का उदाहरण हमें जो कुछ हमारे पास है उससे संतुष्ट होने के लिए प्रेरित करे।

उस स्त्री के संक्षिप्त उत्तर के बाद, स्पष्टतया वह कमरे से चली गई। यदि मैं एलीशा की जगह होता तो मैं अपने कंधे उचकाते हुए कहता, ''ठीक है, मैंने कोशिश कर ली,'' और बात को अपने दिमाग से निकाल देता। परन्तु नबी ने अपना आभार व्यक्त करने के लिए *कुछ* करने का निश्चय किया हुआ था। उसने गेहाजी से सुझाव मांगा: ''तो इसके लिये क्या किया जाए?'' (2 राजाओं 4:14क)।

गेहजी ने कहा, ''निश्चय उसके कोई लड़का नहीं, और उसका पति बूढ़ा है'' (आयत 14ख)। उस जमाने में बांझ होना एक श्राप माना जाता था (देखें 1 शमूएल 1:6, 7)। आज नि:संतान होना अफ़सोसनाक है पर तब यह एक त्रासदी थी। रॉबर्ट वैनोय ने लिखा कि बेटा न होने का अर्थ क्या होता है:

> ... परिवार का नाम मिट जाना था और इसकी भूमि और सम्पत्ति दूसरों को चली जाती थी। इस जवान पत्नी के भविष्य को भी बड़ा खतरा था कि यदि वह विधवा हो जाए तो कई साल तक उसका कोई उपाय करने वाला या रक्षा करने वाला नहीं होना था। क्योंकि किसी विधवा की एकमात्र सामाजिक सुरक्षा उसके बच्चे होते थे।[17]

एलीशा ने इस पर स्वयं विचार क्यों नहीं किया? मैं कुछ नहीं कह सकता पर हम में से अधिकतर लोगों ने पाया है कि कई बार इसी मामले पर दूसरों से बात करने पर सहायता मिलती है। इससे अच्छे विचार भी मिल सकते हैं (शायद ''स्पष्ट'' विचार भी) जो हमें पहले नहीं आए।

एलीशा को गेहाजी की बात पसन्द आई। यदि नबी स्त्री को देश की अदालत के लिए ''सिफारिश'' नहीं कर सकता था तो वह स्वर्ग की अदालत में ''सिफ़ारिश'' तो कर सकता था।[18] उसने अपने सेवक से उस स्त्री को फिर बुलाने के लिए कहा (आयत 15क)। जब वह आई, तो ''तब वह द्वार में खड़ी हुई'' (2 राजाओं 15ख)। अभी भी परमेश्वर के सेवक पर किसी प्रकार का दोष न लाने के लिए हर प्रकार की सावधानी बरते हुए।

एलीशा ने स्त्री से सीधे बात की। उसने उसे बताया, ''बसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी'' (आयत 16)। NCV में अगले साल इसी समय, ''तेरी गोद में एक बेटा होगा'' है।

स्त्री अभिभूत हो गई। उसने कहा, ''नहीं, हे मेरे प्रभु! हे मेरे परमेश्वर के भक्त ऐसा नहीं,

अपनी दासी को धोखा न दे'' (आयत 16ख)। बाद में उसने अपना उत्तर इन शब्दों में दिया ''क्या मैं ने अपने प्रभु से पुत्र का वर मांगा था? क्या मैं ने न कहा था मुझे धोखा न दे?'' (आयत 28)। वह एलीशा की ईमानदारी पर संदेह नहीं कर रही थी; बस उसे यकीन नहीं हो रहा था जैसे हम कहते हैं ''यकीन नहीं आता।'' आयत 28 में NIV में ''मेरी उम्मीदें न बढ़ा'' है। स्त्री ने संकेत दिया था कि उसे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं यानी उसका जीवन सम्पूर्ण है, पर उसके भावनात्मक उत्तर से पता चलता है कि उसके मन में बेटे की इच्छा कितनी अधिक थी। यह इस बात का भी संकेत देता है कि उसने उम्मीद छोड़ दी थी, शायद बहुत पहले। हम उसके उत्तर को इन शब्दों में लिख सकते हैं: ''ऐसी प्रतिज्ञा के साथ मुझे सता न जो कभी पूरी नहीं हो सकती!'' हमें साराह के उत्तर का स्मरण आता है जब स्वर्गदूतों ने अब्राहम को बताया था कि बच्चा जनने की उसकी उम्र बीत जाने के बाद भी साराह के बेटा होगा (उत्पत्ति 18:10-12)।

साराह की बात करें तो शूनेमी स्त्री उस धर्मी पूर्वज की संतान थी और उसे याद होना चाहिए था कि ''यहोवा के लिए कुछ भी कठिन'' नहीं (उत्पत्ति 18:14)। परमेश्वर के लिए हस्तक्षेप करने और बच्चा पाने के लिए किसी बांझ स्त्री को योग्य बनाने का यह पहला समय नहीं होना था। और न ही अन्तिम (उत्पत्ति 18:1-15; न्यायियों 13:2-24; 1 शमूएल 1:1-20; लूका 1:5-25, 57-66)।

यहोवा ने स्त्री को निराश नहीं किया। उसे ''गर्भ रहा,[19] और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ'' (2 राजाओं 4:17)। क्या आपके बच्चे या नाती-पोते हैं? क्या आपने किसी बालक या छोटे बच्चे को देखा है? यदि हां तो आप इन घटनाओं की शृंखला की कल्पना आसानी से कर सकते हैं:

- उस स्त्री का आनन्द जब उसे लगा कि वह गर्भवती है, उसका अपनी कोख में बच्चे के उछलने को पहली बार महसूस करना।
- जन्म के बाद मां को सिर झुकाए आश्चर्य से अपनी बाहों में नवजन्मे बेटे को देखना और फिर उस उपहार के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए ऊपर को देखना।
- अगली बार एलीशा के उधर से गुज़रने पर माता के बच्चे को उसे देखने के लिए देना।
- बाद में आने के समय माता का अपने दान, पहले शब्द, पहले कदम के बारे में एलीशा को गर्व से बताना और बच्चे का उनके कदमों में खेलना।

क्या यह हो सकता है कि नबी के कहे के अनुसार वह बच्चा एलीशा के घुटनों पर बैठा हो और वह परमेश्वर के पुराने समय के महान लोगों की कहानियां सुनता हो? कम से कम मुझे इतना निश्चय है कि इससे इस उधार स्त्री को प्रसन्न देखकर एलीशा के चेहरे पर मुस्कान आई होगी। सच्ची प्रसन्नता दूसरों को प्रसन्न करने में है।

सारांश

कहानी को हम अगले पाठ में जारी रखेंगे। इस पाठ में हमने कई प्रसिद्ध सच्चाइयों पर ज़ोर दिया है पर इन से महत्वपूर्ण कोई भी नहीं है: आतिथ्य सत्कार करने वाले होने की आवश्यकता और आभारी होने की आवश्यकता। उम्मीद है कि हमें और आतिथ्य सत्कार करने वाले बनने

और अपना आभार मनुष्यों और परमेश्वर दोनों को जताने में प्रोत्साहन मिला होगा। अन्त में मैं इस वचन पाठ से एक अन्तिम संदेश देना चाहता हूं। शूनेमी स्त्री को बेटे की एलीशा की प्रतिज्ञा पर विश्वास करना कठिन लगा। तौभी वह प्रतिज्ञा वैसे ही पूरी हुई जैसे नबी ने कहा था कि यह होगी। परमेश्वर ने अपने वचन में हमारे साथ अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं की हैं:

- यदि हम उसके पुत्र में विश्वास करके बपतिस्मा लेते हैं, तो हमारे पिछले सभी पाप धो डाले जाएंगे (मरकुस 16:16; प्रेरितों 22:16)।
- यदि हम भरोसा रखके आज्ञा मान लें तो वह हमारे साथ होगा और कभी हमें त्यागेगा नहीं (मत्ती 28:19, 20; इब्रानियों 13:5)।
- यदि हम अपने आप में नहीं बल्कि उसकी करुणा में भरोसा रखके विश्वास से जीवन बिताएं (इफिसियों 2:4), तो वह स्वर्ग में अनन्तकाल के लिए अपने साथ रहने के लिए घर ले जाएगा जहां कोई आंसू या पीड़ा नहीं होगी (प्रकाशितवाक्य 2:10; 21:3, 4)।

शूनेमी स्त्री की तरह कइयों को लगता है कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं ''पर यकीन करना कठिन है।'' परन्तु आप आश्वस्त रहें कि प्रभु हमारे साथ की गई प्रतिज्ञाओं को वैसे ही पूरा करेगा जैसे उसने बहुत पहले उस अनुग्रहकारी स्त्री से की थी। आप उसके जीवन पर और अपने अनन्तकाल पर भरोसा कर सकते हैं। क्या आप उसकी प्रतिज्ञाओं को मानने को तैयार हैं? तो आज ही उसके पास आ जाएं!

टिप्पणियां

[1]एफ़. डल्ब्यू. क्रमचर, *एलीशा, प्रोफेट ़फ़ॉर अवर टाइम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 59. [2]जवान स्त्री का विवाह बूढ़े आदमी से क्यों हुआ था? सम्भवतया क्योंकि यह माता पिता की इच्छा से किया गया होगा। [3]डोनल्ड जे. वाइसमैन, *1 एंड 2 किंग्स: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 203. [4]जे. राबर्ट वेनॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केनथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 529. [5]करेन मेनस, राबर्ट जे. मोरगन, *नेल्सन'स कम्पलीट बुक ऑ़फ़ स्टोरीज़, इलस्ट्रेशंस एंड कोट्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 2000), 452 में उद्धृत करेन मेनस के एक लेख से लिया गया। [6]सी. एफ़. केल एंड एफ़. डेलिश, ''1 एंड 2 किंग्स,'' *कमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेम्याह, एस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंडिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 310; जी. रेवलिनसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक. 5, *फ़र्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 65; जेम्स बर्टन कॉ़फ़मैन एंड थेलमा बी. कॉ़फ़मैन, कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स, जेम्स बर्टन कॉ़फ़मैन कमैंट्रीज़, द हिस्टोरिकल बुक्स, अंक. 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस 1992), 50. [7]रेवलिंसन, 65. [8]ली टैन, *इन्साक्लोपीडिया ऑ़फ़ 7,700 इलस्ट्रेशन: साइन्स ऑ़फ़ द टाइम्स* (रॉकविल्ले, मेरिलैण्ड: एशोरेंस पब्लिशर्स, 1979), 1461. [9]वही। [10]वही, 1457.

[11]वही, 1456. [12]जेम्स एस. हेविट, संपा. *इलस्ट्रेशंस अनलिमिटेड* (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1988), 264 में उद्धृत। [13]वही, 263. [14]हरबर्ट वी. प्रोचनो, *1400 आइडियास ़फ़ॉर स्पीकर्स एंड टोस्टमास्टर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1994), 114 में उद्धृत। [15]हेविट, 264. [16]वाइसमैन, 204. [17]विनोय, 529. [18]मैथ्यू हेनरी, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल,* संपा. लेसली एफ़. चर्च (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन:

जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961), 404. [19]बाइबल इस बात का विस्तृत विवरण नहीं देती कि वह कैसे गर्भवती हुई। मेरा अनुमान है कि ''बूढ़े'' पति पर आश्चर्यकर्म हुआ था।